

॥ श्री रुद्राष्टकम् ॥

नमामीशमीशान निर्वाणरूपं
विभुं व्यापकं ब्रह्म वेदस्वरूपं ।
निजं निर्गुणं निर्विकल्पं निरीहं
चिदाकाशमाकाशवासं भजेडहं ॥१॥

Namami shamishaan nirvaan rupam
Vibhum vyapakam brahma
vedswaroopam
Nijam nirgunam nirvikalpam niriham
Chidakash maakaash vasam
bhajeham

निराकारमोंकारमूलं तुरीयं
गिरा ग्यान गोतीतमीशं गिरीशं
करालं महाकाल कालं कृपालं
गुणागार संसारपारं नतोडहं ॥२॥

Nirakaram omkar moolam turiyam
Gira gyan goteetmisham girisham
Karalam mahakal kaalam kripalam
Gunagar sansar paaram nato ham

तुषाराद्रि संकाश गौरं गभीरं
मनोभूत कोटि प्रभा श्री शरीरं ।
स्फुरन्मौलि कल्लोलिनी चारु गंगा
लसद्भालबालेन्दु कण्ठे भुजंगा ॥३॥

Tusharadri sankash gauram
gambhiram
Manobhot koti prabha sri shariram
Sfuranmauli kallolini charu ganga
Lasadbhalbalendu kanthe bhujanga

चलत्कुण्डलं भ्रू सुनेत्रं विशालं
प्रसन्नाननं नीलकण्ठं दयालं ।
मृगाधीशचर्माम्बरं मुण्डमालं
प्रियं शंकरं सर्वनाथं भजामि ॥४॥

Chalatkundalam bhru sunetram
vishalam
Prasannanam neelkantham dayalam
Mrugadheesh charmambaram
mundamalam
Priyam shankaram sarvanatham
bhajami

प्रचण्डं प्रकृष्टं प्रगल्भं परेशं

॥ श्री रुद्राष्टकम् ॥

अखण्डं अजं भानुकोटिप्रकाशम् ।
त्रयः शूलनिर्मूलनं शूलपाणिं
भजेडहं भवानीपतिं भावगम्यं ॥५॥

Prachandam prakrushtham
pragalbhaam paresham
Akhandam ajam bhanu kotiprakasham
Trayam shoolnirmoolam shoolpani
BhajeHam bhavani patim
bhavgamyam

कलातीत कल्याण कल्पान्तकारी
सदा सज्जनानन्ददाता पुरारी ।
चिदानंद संदोह मोहापहारी
प्रसीद प्रसीद प्रभो मन्मथारी ॥६॥

Kalateet kalyan kalpantkaari
Sada sajjan anand daata purari
Chidanand sandoh mohapahaari
Prasid prasid prabho manmathari

न यावद उमानाथ पादारविन्दं
भजन्तीह लोके परे वा नराणाम् ।
न तावत्सुखं शान्ति संतापनाशं
प्रसीद प्रभो सर्वभूताधिवासं ॥७॥

Na yaavad umanath padaarvindam
Bhajanteeh loke pare va naranam
Na taavat sukham shanti
santaapanasham
Prasid prabho sarvabhootadhivasam

न जानामि योगं जपं नैव पूजां
नतोडहं सदा सर्वदा शम्भु तुभ्यम् ।
जरा जन्म दुःखौघ तातप्यमानं
प्रभो पाहि आपन्नमामीश शम्भो ॥८॥

Na janaami yogam japam naeva
poojam
NatoHam sada sarvada shambhu
tubhyam

Jara janm dukhaudh tatapyamanam
Prabho paahi aapan namamish
shambho

रुद्राष्टकमिदं प्रोक्तं विप्रेण हरतोषये ।
ये पठन्ति नरा भक्त्या तेषां शम्भुः
प्रसीदति ॥

॥ श्री रुद्राष्टकम् ॥

Rudrashtakmidam proktam vipren
hartoshaye
Ye pathanti nara bhaktya tesaam
shambhu prasidati

॥ इति श्री गोस्वामीतुलसीदासकृतं
श्रीरुद्राष्टकम् संपूर्ण ॥

Iti Sri Goswami Tulsidas krutham Sri
Rudrashtakam sampoornam